सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४७] ।

मणजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

---

मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २४७ मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४८]।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो चेव मणजोगा वत्तव्वा। सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोगो, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि, सत्त

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही है, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलि सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगियोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

नं. २४८ मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन:	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं	१ आहा.	२ साका. अना.

संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४९]।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ[१] त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं।

वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, मण-सरीर-पज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर-मणबलपाणा उच्चंति। ताओ वि उप्पण्णसमयादो जाव जीविदचरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्संत्ति। जेण मण-वचि-कायजोगा

चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मृषामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक मृषामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकार सत्यमृषामनोयोगियोंके भी आलाप कहना चाहिए।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण सात प्राण और छह प्राण होते हैं। मनःपर्याप्ति और शरीरपर्याप्तिसे उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं। वे शक्तियां भी उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं। और जिस कारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं ग्रहण किये गये हैं, इसलिये वचनयोगियोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्थात् युक्त अवस्थाके होनेपर भी दशों प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा

---

१ मु. खीणसण्णाओ।

नं. २४९　　मृषा मनोयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ सयो. अयो. विना.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१ मृषा.	३ अयोग.	४ अकषा.	७ के. ज्ञा. विना.	७	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पाणेसु ण गहिदा तेण वचिजोगे णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२५०]।

वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो

क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं. २५० वचनयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१३ अयो. विना.	५ द्वी. प. त्री. प. चतु. प. असं. प सं प	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४ क्षीणसं.	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	४ वच.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका अना. यु. उ